

६—महिमा माधुर्य

(१)

जय जय युगल किशोर जी जै वृन्दावन धाम।
जय जय साईं अमां जी जै जै श्यामा श्याम॥

(२)

जै जै साईं अमड़ि जी जै जै श्रीसीयाराम।
जै जै श्रीवृन्दाविपिन जै जै राधेश्याम॥

(३)

श्रीवृन्दावन वेकुण्ठ खे तोरियो तुलसीदास।
भारी हुआ सो हित रहियो हल्को वियो आकाश॥

(४)

सन्त शिरोमणि शील निधि सन्त रूप भगवान।
जै जै साईं अमड़ि जू अचलु अवहां जो शानु॥

(५)

साईं अमां साईं अमां प्राण प्यारा।
साईं अमां साईं अमां जीअ जियारा॥

(६)

श्रीवृन्दावन आनंद घन सकल सुखनि भण्डार।
जिते सदां क्रीड़ा करे प्यारो नंद कुमार॥

(७)

श्रीजू जन्म आनंद जी घर घर वाधाई।
जै श्रीजू अमां जै श्रीजू अमां जड़ चेतन रट लाई॥

(८)

बृज जो रसु वैकुण्ठ खां ऊंचो वेद पुराण पुकारीनि
जिति जड़ चेतन प्रेम उमंग सां

मिठी स्वामिनि नाम उचारीनि॥

(९)

जै जै मिथिला अवध जै बरसानो नंद गाम।

जै जै जै साईं अमां जै वृन्दाबन धाम॥

(१०)

कृपा कृपा सिंधु प्रभु आ जीवनि जो हित चाहे।

इहा कृपा मिठी राम जी साईं साराहे॥

(११)

श्रीवृन्दाबन धाम सुख जा सदन आनन्द जो भण्डार।

जिते सदां क्रीड़ा करनि मिठी स्वामिनि नन्द कुमार॥

(१२)

जै जै श्रीबृज धाम जी जै जै युगल को नाम।

जै जै जै साईं अमां जै जै श्यामा श्याम॥

(१३)

हमरे प्राण गोपाल गोविन्द।

प्राण प्यारे नंद दुलारे यशुमति आनंद कंद॥

(१४)

श्रीवृन्दाबन श्रीवृन्दाबन जीवन जो आधार।

जंहिजी महिमा नितु गाए प्यारो नंद कुमार॥

(१५)

गोकुल भूषण मन मोहन सुख सागर बृज चंद।
रैन दिवस रट लाइये अलबेलो आनन्द कंद॥

(१६)

साई अमां साई अमां सन्तनि जा सिरताज।
अविचल माणीनि साहिबी महिर भरिया महाराज॥

(१७)

जै जै युगल किशोर जी जै वृन्दावन चन्द।
जै जै नितु साई अमां जै जै मैगसि चंद॥

(१८)

सतिगुर मैगसि चंद्र परा प्रेम अवितार।
शरणागत पालक प्रभू प्रणतनि सुख दातार॥

(१९)

वृन्दावन आनन्द घन सदा सुखधाम रसाल।
जहां नित्य लीला करें प्राण प्रिया नन्द लाल॥

(२०)

माखन चोर जी जै जै बोलो नन्द किशोर की जै जै।
मन मोहन चित चोर की जै जै
रस निधान श्याम गौर जी जै जै॥

(२१)

साई अमां गोद में युगल लाल सुख धाम।
के चवनि सियाराम आ के भाइनि श्यामा श्याम

(२२)

जै जै गोकुल ईश जी जै वृन्दाबन चंद।
जै जै प्रेम परानिधी मालिकु मैगसि चंद॥

(२३)

आनंद कंद बृज चंद जी दिलि सगाई अ लाइ सिके।
इन्हीअ करे दामल सां गदु अची बरिसाने मंझि टिके॥

(२४)

खिलंदी आसमि अमड़ि वटि श्रीलादुली महाराणी।
अमड़ि लाती उर सां सर्वसु धनु ज़ाणी।
नेह निधी नृपनन्दनी तोतां घोरें पियां पाणी
मुंहिजो प्राणु मनुवाणी, शल सभु साराहीन स्वामिनी॥

(२५)

चरण कमल रघुवीर के साईं प्राण आधार।
श्रीसीय अमड़ि पद पद्म के परा भक्ति दातार।
परा भक्तिदातार स्नेह की वर्षा बरसे
नव लीला दरिशाय रसिक हिय सरवर सरसे
जै जै प्रभु पद कल्पतरु स्वामिनि उर श्रृंगार
कोटि वार जै जै कहूं मैगसि प्राण आधार॥

(२६)

द्रिये रघुवर लाल खे लोली अमां।
लोढ़े लाल लुढ़ण जी हिंडोली अमां॥
खाराए आंडुरि सां मिसिरी मखणु,

દ્રિસી ઠેંગ દ્રિયે થો લાલુ લખણુ,
લગો જિભિડી અ સાં રામુ ચપિડા ચટણ,
ભરી લીલા આનન્દ સાં ચોલી અમાં॥

ચિરુ જીઝ અમાં કૌશલ્યા જી નિધી
શલ સતિગુરુ દ્રિયેઈ સુખનિ સિધી
પતિ પુણયનિ સાં મૂં હીઅ સમ્પતિ લધી
ઠરી દિલિડી દ્રિસી તો કલૌલી અમાં॥



અજર અમર રહુ સ્વામિનિ રાણી।
સદાં કરે પિયુ તો મન ભાણી॥